❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 45, अंक 8 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 दिसम्बर, 2021 से रविवार 26 दिसम्बर, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

95वें बलिदान दिवस (23 दिसम्बर) पर
अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का पुण्य स्मरण

भारतीय स्वतन्त्रता समर एवं भारतीय संस्कृति के अग्रदूत

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द : कुछ प्रेरक संस्मरण

वैसे तो हम सब स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से परिचित हैं। कैसे वह नास्तिक से आस्तिक बने, कैसे गुरुकुल की स्थापना की, कैसे और क्यों भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना की आदि सब बातें हम सब जानते हैं, किन्तु प्रत्येक महापुरुष के जीवन की कुछ ऐसी घटनाएँ होती है जो यद्यपि बहुत महत्वपूर्ण होती हैं किन्तु हमारे ध्यान से निकल जाती हैं। आज मैं उन्हीं कुछ भूली-बिसरी घटनाओं के कुछ संस्मरण आपको बताने जा रही हूं।

इस बात से तो हम सब परिचित हैं कि दिल्ली में हो रहे दंगों को शांत करने के लिए स्वामी जी को जामा मस्जिद में भाषण हेतु बुलाया गया था। आज तक दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से मुस्लिमों की एक सभा को सम्बोधित करने का सम्मान दुनिया में किसी और गैर मुस्लिम को नहीं मिला है। जिस विशेष बात की ओर मैं आपका ध्यान दिलाना चाहती हूं, वह यह है कि यहीं पर उन्होंने "हम" शब्द से हिन्दू मुस्लिम एकता को एक नई परिभाषा दी थी। बताते हैं कि स्वामी जी ने अपने उस सम्बोधन में कहा था कि हिन्दी का 'हम' शब्द 'ह' से हिन्दू व 'म' से मुसलमान को दर्शाता है और यह शब्द दोनों समुदायों की एकता का प्रतीक है। एक ओर तो स्वामी जी "हम" शब्द की नई परिभाषा देते हैं, दूसरी ओर एक मतान्ध अब्दुल रशीद उनकी रुग्ण अवस्था में हत्या कर देता है । लेकिन इस हत्या के बाद सबसे चौंकाने वाली बात थी, महात्मा गांधी जी की प्रतिक्रिया। स्वामी जी की हत्या के 2 दिन बाद गांधी जी ने गुवाहाटी में कांग्रेस के अधिवेशन में कहा कि "मैं अब्दुल रशीद को अपना भाई मानता हूं.. मैं यहां तक कि उसे स्वामी श्रद्धानंद जी की हत्या का दोषी भी नहीं मानता हूं.... मैं अब्दुल रशीद की ओर से वकालत करने की इच्छा रखता हूं।"'

जब स्वामी जी ने हरिद्वार के कांगड़ी गांव में "गुरुकुल" की स्थापना की थी गांधी जी तब दक्षिण अफ्रीका में संघर्षरत थे। इन मोहनदास कर्मचंद गांधी को भारत में उस समय कोई जानता भी नहीं था। ऐसे समय में स्वामीजी ने गुरुकुल के छात्रों के द्वारा1500 रुपए एकत्रित कर दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी को भेजे थे। स्वामी जी और गांधीजी की पहली मुलाक़ात कैसे हुई, यह भी एक रोचक घटना है। शायद 1915 की बात हैं। कनखल की ओर से एक साधारण सा व्यक्ति एक लड़के के साथ महात्मा मुंशीराम जी के बंगले की ओर जा रहा था। उधर महात्मा जी बड़ी जल्दी में अपने बंगले से ऑफिस की ओर जा रहे थे। उस आदमी ने आगे बढ़कर महात्मा जी के चरण छुए। महात्मा जी जल्दी में थे, वे बिना रुके आगे बढ़ गये। तब आगंतुक व्यक्ति के साथ चल रहा लड़का दौड़ा और उसने महात्मा जी से कुछ कहा, फिर क्या था, महात्मा जी पीछे की ओर लपके और उस व्यक्ति को गले से लगा लिया। क्या आप सोच सकते हैं कि आगंतुक व्यक्ति कौन था? वह थे स्वयं मोहनदास कर्मचंद गाँधी। वे अभी गाँधी ही कहलाते थे, महात्मा नहीं बने थे। महात्मा की उपाधि तो स्वयं स्वामी श्रद्धानंद जी ने ही उन्हें दी थी। गांधी जी जब गुरुकुल पहुंचे तो महात्मा मुंशीराम तथा राष्ट्रभक्त छात्रों के समक्ष नतमस्तक हो गए। विडम्बना देखिये की यही गांधीजी बाद में श्रद्धानन्द के हत्यारे अब्दुल रशीद की वकालत करने के लिए तैयार थे।

मैं कहना चाहती हूँ आज देश की जनता को सच जानना और समझना होगा। अभी तक भारत का इतिहास वामपंथी तालों में कैद है। इसे खुलना ही चाहिए।

स्वामी जी का मृदुल , शालीन और सौम्य स्वाभाव

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के स्वाभाव, मृदुलता, शालीनता और सौम्यता से प्रभावित होकर उनके अनेक प्रशंसक बन गए थे, जिनमें न केवल हिन्दू थे अपितु ईसाई और मुसलमान भी थे। ऐसे ही स्वामी जी के एक भक्त थे मौलाना आसफ अली बार एट लॉ। आप दिल्ली के मशहूर वकील थे और क्रान्तिकारी अरुणा आसफ अली के पति थे। एक बार स्वामी जी और मौलाना आसफअली इकट्ठे स्वाधीनता संग्राम में शामिल होने के कारण जेल में थे। मौलाना आसफअली का स्वास्थ्य उन दिनों कुछ अच्छा न था। शरीर मैं रक्त की कमी थी। चेहरा पीला पड़ गया था। स्वामी जी को उनकी दशा देखकर चिन्ता हुई। जेलर स्वामी जी का प्रशंसक था और उनका बहुत आदर करता था। स्वामी जी ने मौलाना अली की दशा देखकर जेलर से कहकर उनके लिए एक दूसरी कोठरी चुनी, जिसमें धूप और प्रकाश स्वच्छन्द रूप से मिल सकता था। उनके आहार के सम्बन्ध में भी सिफारिश कर दी। वाह! कितना सच्चा वात्सल्य भाव था। खुद जेल में थे, सभी प्रकार के कष्ट

- शेष पृष्ठ 4 एवं 7 पर

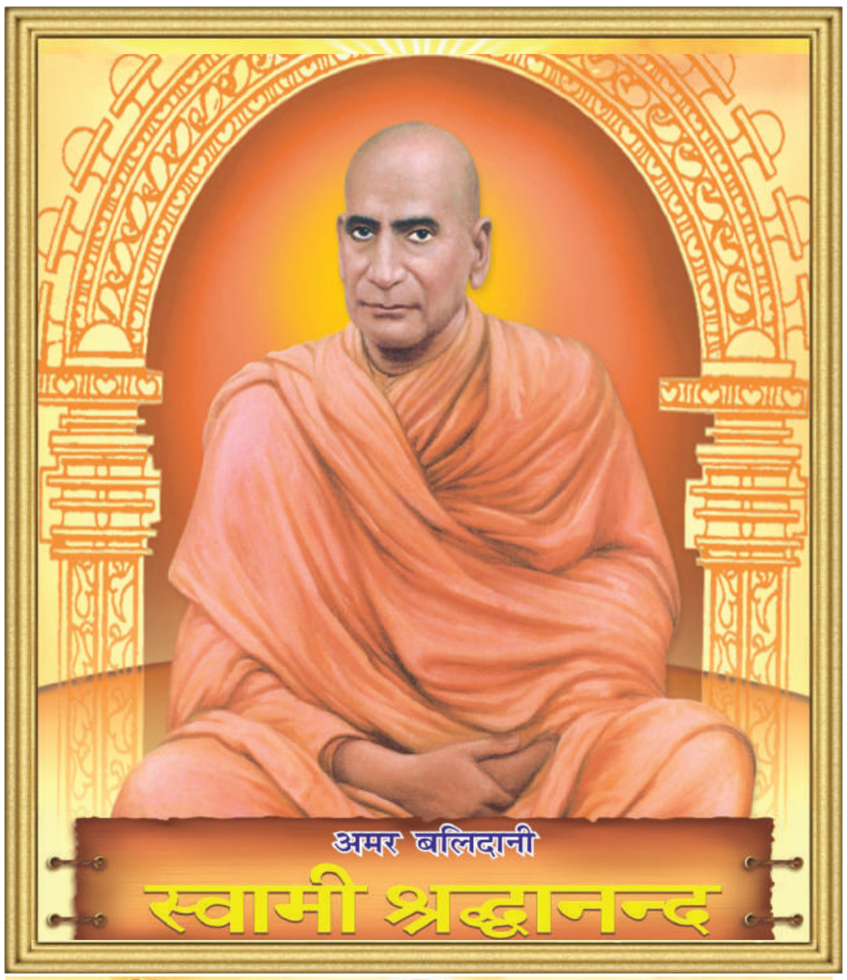

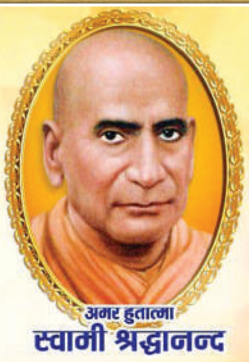

ओ३म्

महर्षि दयानंद के अनन्य शिष्य, महान राष्ट्रभक्त, आर्य समाज के नेता, स्वतंत्रता सेनानी, अमर बलिदानी

95 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द
बलिदान दिवस
शनिवार 25 दिसम्बर 2021

कार्यक्रम

यज्ञ -श्रद्धानंद भवन : प्रातः 10:00 बजे से
सांकेतिक शोभायात्रा शुभारम्भ : प्रातः 11:00 बजे से
पद यात्रा - लाहोरी गेट - खारी बावली -
चाँदनी चौक - स्वामी श्रद्धानंद प्रतिमा टाऊन हॉल
आर्य समाज दिवान हॉल : अपराह्न 12:00 बजे
भजन - नाटिका - श्रद्धांजलि
शान्ति पाठ - लंगर : अपराह्न 1:00 बजे

सांकेतिक शोभायात्रा बिना वाहन तथा बैनर के होगी। आपसे निवेदन है कि वाहन को घर पर ही रखकर सरकारी बस अथवा मेट्रो से आएं।

इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण आर्य संदेश टीवी पर देखें
www.AryaSandeshTV.com

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

देववाणी-संस्कृत

दैव्य जन और मनुष्य जन

वेद-स्वाध्याय

यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि।
अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः।। - *अथर्व. 6/51/3*
ऋषिः **वसिष्ठः।।** देवता - **वरुणाः।।** छन्दः **पादनिचृज्जगती।।**

शब्दार्थ- वरुण = हे वरुण **मनुष्याः** = हम मनुष्य **दैव्ये जने** = तुझ दिव्य जन में **इदं यत् किंच अभिद्रोहम्** = यह जो कुछ द्रोह **चरामसि** = किया करते हैं और **अचित्तीः** = अज्ञान और असावधानता से **यत् तव धर्माः युयोपिम** = जो तेरे धर्मो का लोप किया करते हैं **देव** = हे देव **तस्मात् एनसः** = उस पाप के कारण **नः मा रीरिषः**= हमारा नाश मत करो।

विनय- हे वरुण! तुम जन हो तो दैव्य जन हो-पर हम गिरते-पड़ते उठने का यत्न करने वाले जन हैं। हे देव! हम मनुष्यों पर दया करो, हम तुम्हारी दया के पात्र हैं। हम बेशक तुम्हारा द्रोह करने वाले बड़े भारी अपराधी होते रहते हैं। तुम्हारे धर्मो का लोप करना सचमुच बड़ा द्रोह है। जो कुछ हमें मिल रहा है वह सब-कुछ तुम्हीं से मिल रहा है और वह सब इसीलिए मिल रहा है, क्योंकि तुम्हारे धर्म सत्य हैं, अखण्ड हैं। यदि तुम्हारे धर्म कभी खण्डित हो सकें तो तुम तुम न रहो, परन्तु इन्हीं तुम्हारे सत्यधर्मो को (जिनके कारण हमें यह सब-कुछ मिल रहा है) हम लोग अपने व्यवहार में लोप कर देते हैं। यह कितना द्रोह है? ये तुम्हारे सनातन धर्म हमारे व्यवहार में धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय आदि रूपों में प्रकट होते हैं, परन्तु हम इनका परिपालन न कर तुम सर्वदाता प्रभु के द्रोही होते रहते हैं। फिर भी हे देव! हमारी तुमसे प्रार्थना है कि हमें सहन करो, हमें कठोर दण्ड देकर हमारा नाश मत करो! क्योंकि यह सब धर्मभङ्ग हम जान-बूझकर नहीं करते। जो कुछ हमसे धर्म-लोप हाता है वह अज्ञान से, प्रमाद से, असावधानी से होता है। अब हम कभी जान-बूझकर अधर्माचरण में नहीं प्रवृत्त होते, पर ये अज्ञान की, असावधानी की भूलें होते रहना तो हम मनुष्यों के लिए अस्वाभाविक नहीं है। इसलिए हम तुम्हारी दया के पात्र हैं। वरुण राजन्! हम जानते हैं कि राजद्रोह बड़ा भारी अपराध है। तुम्हारे सच्चे, पूर्ण कल्याणमय राज्य का द्रोह करना आत्मघात करना है। अतएव अब हम अपनी शक्तिभर और जान-बूझकर तुम परम प्यारे का द्रोह कैसे कर सकते हैं? परन्तु तुम भी हमारे अज्ञान से किये अपराधों को क्षमा करो, किन्तु नहीं, तुमसे हम क्षमा के लिए क्यों कहें? तुम तो हमारा विनाश कर ही नहीं सकते। तुम जो भी कुछ करोगे हमारा कल्याण ही करोगे-यह निश्चित है। फिर तुमसे प्रार्थना तो इसलिए है कि इस द्वारा हम तुम्हारे कुछ और अधिक निकट हो जाएं, हमारा हृदय शुद्ध हो जाए, क्योंकि तुम्हारे आगे रो लेने से हृदय की शुद्धि हो जाती है और भविष्य के लिए धर्म-भङ्ग होने की सम्भावना और-और कम होती जाती है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पंजाब में धार्मिक बेअदबी के मामले संयोग हैं या प्रयोग

एक अरब से बड़े समाज में हिंसा हत्या होना आम बात है। उस समाज में जहाँ अनेकों मतों-वर्गों के लोग रहते हों। कुछ समय पहले कई राज्यों में गाय को लेकर छुट-पुट हिंसा हुई थी, जिनमें कुछ प्रायोजित थी और बहुसंख्यक समाज को बदनाम करने की साजिश थी। जैसा की जाँच एजेंसियों की रिपोर्ट में आया था। इसके अतिरिक्त मजहब के अपमान के नाम पर हत्याएं हिंसाएँ आम हैं और वो खुलेआम इसकी वकालत भी करते हैं। लेकिन जब एक सभ्य और देश के जिम्मेदार जागरूक समाज के अन्दर ऐसी सिल-सिलेवार घटनाएँ हों तो विश्लेषण जरूरी हो जाता है।

थोड़े समय पहले कुंडली बॉर्डर पर व्यक्ति की बेरहमी से हत्या की गयी थी। मामला जब सामने आया तो पता चला कि सिख समाज के धार्मिक ग्रंथ या प्रतीक की कथित बेअदबी का मामला था। हत्या की जिम्मेदारी एक निहंग समूह ले रहा था। हत्या का मुकदमा दर्ज हुआ और हत्या के आरोपी जेल भेज दिए गये। इसी तरह अभी दो दिन पहले ऐसी ही घटना शनिवार को अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में हुई थी। स्वर्ण मंदिर में गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ चल रहा था। तभी एक शख्स सचखंड के अंदर पहुंचने के बाद जंगला कूदकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पास पहुंच गया और उनके सामने रखी किरपाण उठाने की कोशिश की। आरोपी को पकड़ने के बाद बेअदबी के आरोप में उसे एसजीपीसी दफ़्तर ले जाया गया था जहाँ भीड़ की पिटाई में उसकी मौत होने का आरोप है।

लेकिन ठीक दो दिन बाद एक अन्य ऐसी ही घटना का पंजाब के कपूरथला में होना संदेह खड़ा कर रही है। यहाँ भी एक गुरुद्वारे से एक युवक को पकड़ा था। बताया जा रहा है कि कपूरथला जिले के निजामपुर गांव के एक युवक को सुबह 4 बजे निशान साहिब (सिख ध्वज) की बेअदबी करते देखा गया। हालांकि, पुलिस टीम मौके पर पहुंची और उस युवक को अपनी हिरासत में ले लिया, लेकिन कुछ सिख समूहों ने दबाव डाला कि उससे उनके सामने ही पूछताछ की जाए। स्थानीय लोगों ने पुलिस से हाथापाई के बाद युवक की हत्या कर दी।

स्वर्ण मंदिर में घटित श्री गुरुग्रंथ साहिब की अवमानना की घटना दुर्भाग्यपूर्ण है श्री गुरुग्रंथ साहिब व श्री गुरु परंपरा भी हम सबकी साझी विरासत और श्रद्धा का विषय है। भारत की ज्ञान निधि और गुरुओं के संचित ज्ञान का भंडार है। ऐसी अमूल्य ज्ञान निधि का अपमान या बेअदबी किसी भी सूरत में नहीं होनी चाहिए लेकिन इस आधार पर किसी भी व्यक्ति या समूह को कानून अपने हाथ में लेने की इजाजत नहीं है। हालाँकि 2015 से गुरुग्रन्थ साहिब की बेअदबी की 10 घटनाएं हो चुकी हैं, लेकिन हाल संदेह ये है कि हाल ही में हुई दोनों घटनाओं में दोनों मृतकों की पहचान अब तक नहीं हो पाई है।

आखिर कौन हैं ये बिना नाम पहचान के लोग जो अचानक गुरुद्वारों के अन्दर जाते हैं और बेअदबी करने लगते हैं? ये मात्र घटना है या साजिश? क्योंकि साल 2015 से अचानक एक ही तरह की घटना बढ़ जाना क्या किसी बाहरी ताकत के षड्यंत्र का इशारा तो नहीं कर रही हैं?

असल में थोड़े समय पहले हम अस्सी के दशक के दुर्भाग्यपूर्ण काल से निकलकर यहाँ पहुंचे हैं। जहाँ पंजाब के अन्दर पाकिस्तान प्रायोजित नफरत पंजाब में परोसे गयी और देखते ही देखते वो नफरत की चिंगारी कब शोले में बदल गयी पता ही नहीं चला। नफरत का ये खेल तो सीमापार से जा रहा था लेकिन झुलस तो भारतीय समाज

.......जैसे-तैसे समय के साथ दो समाज नफरती खंजर फेंककर बाहर निकले। सामाजिक धार्मिक समरसता का फिर परिचय दिया। लेकिन तब तक कश्मीर में मजहब के नाम पर कश्मीरी मुस्लिमों के नफरती खंजर बाँट दिए। ये इस्लाम के नाम पर उनके लिए आसान भी था। घाटी के आतंकी संगठनों का साथ मिला मस्जिदों के मिम्बर से अजान के साथ नफरत का भी प्रचार हुआ और नतीजन 90 का दशक कश्मीर में हिन्दुओं के लिए नासूर बन गया। लाखों हिन्दुओं को अपना घर जमीन छोड़कर रातों-रात निकलना पड़ा। सिर्फ निकलना ही नहीं पड़ा बल्कि इसका दंश वो लोग अपने ही देश में आज भी झेल रहे है, सिर्फ एक विचारधारा के कारण। उस नफरत के कारण जो लोगों को मजहब के नाम पर धार्मिक बता-बताकर बांटी गयी थी।...... वो गुजरा कल आज देश का इतिहास बन चुका है। किन्तु आज फिर से पंजाब में वो सब घटनाएँ दुबारा होना साजिश की ओर इशारा कर रहीं हैं। नफरत की इस चिंगारी को अभी समझना होगा! क्योंकि एक घटना अकारण हो सकती है लेकिन एक जैसी घटना बार-बार होना अकारण नहीं है।........

रहा था। नतीजतन सिख और हिन्दू समाज के बीच खाई खोदी गयी। नफरत, हिंसा, आतंक और हथियार पाकिस्तान से पंजाब में परोसे गये। परिणामस्वरूप निरंकारी और दमदमी टकसाल आमने-सामने कर दी गयी। नतीजा 1984 की कालिख इस देश और समाज के चेहरे पोत दी गयी।

जैसे-तैसे समय के साथ दो समाज नफरती खंजर फेंककर बाहर निकले। सामाजिक धार्मिक समरसता का फिर परिचय दिया। लेकिन तब तक कश्मीर में मजहब के नाम पर कश्मीरी मुस्लिमों के नफरती खंजर बाँट दिए। ये इस्लाम के नाम पर उनके लिए आसान भी था। घाटी के आतंकी संगठनों का साथ मिला मस्जिदों के मिम्बर से अजान के साथ नफरत का भी प्रचार हुआ और नतीजन 90 का दशक कश्मीर में हिन्दुओं के लिए नासूर बन गया। लाखों हिन्दुओं को अपना घर जमीन छोड़कर रातों-रात निकलना पड़ा। सिर्फ निकलना ही नहीं पड़ा बल्कि इसका दंश वो लोग अपने ही देश में आज भी झेल रहे हैं, सिर्फ एक विचारधारा के कारण। उस नफरत के कारण जो लोगों को मजहब के नाम पर धार्मिक बता-बताकर बांटी गयी थी।

वो गुजरा कल आज देश का इतिहास बन चुका है। किन्तु आज फिर से पंजाब में वो सब घटनाएँ दुबारा होना साजिश की ओर इशारा कर रही हैं। नफरत की इस चिंगारी को अभी समझना होगा! क्योंकि एक घटना अकारण हो सकती है लेकिन एक जैसी घटना बार-बार होना अकारण नहीं है।

शेष पृष्ठ 7 पर

बाल बोध

आगे बढ़ो, बढ़ते रहो : बच्चों के लिए वैदिक सन्देश

मनुष्य विचारशील प्राणी है। अतः प्रत्येक व्यक्ति आगे बढ़ने का विचार करता है, ऊंचा उठने की इच्छा रखता है। सफलता की कामना सबकी होती है। क्योंकि यह मानवजाति का निजी स्वभाव है। इसलिए मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति कहलाता है। मनुष्य को छोड़कर किसी अन्य योनि के पास इस तरह की विशेषता नहीं है कि वह अपने उत्थान के विषय मे विचार और प्रयास कर सके। केवल मनुष्य को ही परमात्मा का यह वरदान प्राप्त है कि वह उचित अनुचित का भेद समझकर, सही दिशा का चयन करे, उन्नति, प्रगति और सफलता के मार्ग पर आगे बढ़े। दुनिया में जिन लोगों ने सफलता के परचम लहराने का प्रेरक कार्य किया उनकी अनेक अन्य विशेषताओ में यह सबसे बड़ी बात थी कि वे विचार करके निर्णय लेते थे, उनका रिमोर्ट कंट्रोल उनके अपने हाथ में था, वे दूसरों के इशारों पर नाचने वाले नहीं थे, वे अपने कार्यों के विषय में स्वयं निर्णय लेते थे। वे उचित अनुचित को पहले विचारते थे। उनकी योजना इतनी जबरदस्त होती थी कि उसमें असफलता का कोई कारण शेष नहीं बचता था।

आपने यह अक्सर देखा होगा कि मनुष्य अपनी उन्नति की राह में आए अवरोध को दूर करने के लिए अपने रहन सहन, आहार, व्यवहार, व्यवस्था में परिवर्तन करता रहता है, इसके लिए बहुत से लोग हड़ताल, आंदोलन भी करते हैं कि उनके विचार के अनुरूप जब कोई व्यवस्था उन्हें ठीक नहीं लगती, तो वे उसका पूरी ताकत से विरोध करते हैं, लेकिन क्या कभी किसी शेर को या किसी अन्य जानवर को, पशु-पक्षी को किसी तरह के परिवर्तन को पसंद न पसन्द करते देखा है, नहीं। क्योंकि उनके भीतर विचारशीलता नहीं होती, उनकी अपनी कोई मंजिल या लक्ष्य नहीं होता, वे सब कोल्हू के बैल की तरह केवल गोल-गोल घूमते हैं।

किन्तु मनुष्य लगातार अपनी उन्नति के लिए सजग रहता है, ये मनुष्य का

....वेद का दिव्य सन्देश है - **उद्यानं ते पुरुष नावयानम्** अर्थात् हे मनुष्य, तुझे उन्नति के उच्च शिखर तक पहुंचना है उसके लिए नित नए-नए तरीके खोजने हैं खोजते समय अवरोध आएंगे लेकिन तुझे रुकना मना है समस्याओं को ठोकर मारकर आगे बढ़ जाना ही तेरा लक्ष्य होना चाहिए और यही जीवन का वास्तविक उद्देश्य भी है कि आगे बढ़ो और बढ़ते रहो। यह सत्य है कि इंसान के अंदर आगे बढ़ने की इच्छा बचपन से ही होती है यह आग की चिन्गारी सबके अंदर है, पर किसी के भीतर तो यह प्रज्वलित होती है और किसी की आगे बढ़ने की, ऊंचा उठने की इच्छा रूपी अग्नि के ऊपर राख पड़ी होती है और आपने देखा होगा कि जलती हुई आग से तो शेर भी डर जाता है लेकिन बुझी हुई आग की राख को रौंदकर तो चीटियां भी आगे बढ़ जाती है; इसलिए अपनी इच्छाओं आकांक्षाओं को राख मत बनने देना। आगे बढ़ना, ऊंचा उठना मनुष्य का लक्ष्य और उद्देश्य होना चाहिए। अपने लक्ष्य और उद्देश्य को पूरा किए बिना, मंजिल को पाएं बिना, कभी नहीं रुकना चाहिए।......

वास्तविक स्वभाव है। यह अलग बात है कि बहुत से मनुष्य अपने स्वभाव को भुलाकर विपरीत आचरण और व्यवहार करने लगते हैं इसलिए अथर्ववेद में एक मंत्र आता है जिसका भावार्थ यह है कि हे मनुष्य तू अपना स्वयं निरीक्षण कर कहीं तेरे भीतर पशुओं की प्रवृत्ति तो नहीं आ गई है, कहीं तू उल्लू की तरह अंधेरे में जीने का आदि तो नहीं हो गया है, कहीं तेरे भीतर भेड़िया का स्वभाव तो नहीं आ गया है....... अतः अपना निरीक्षण कर, आत्म चिन्तन कर, आत्म विश्लेषण कर, विचार कर। क्योंकि मनुष्य के पास ही बुद्धि है, सोचने-समझने की ताकत है, सही-गलत को समझने की शक्ति है। इसी विशेषता के कारण मनुष्य श्रेष्ट है। अपनी इस श्रेष्ठता को बनाए रखने के लिए मनुष्य को सदैव प्रयत्न शील रहना चाहिए, पूरी विचार शीलता के साथ, पूरी बौद्धिक क्षमता के साथ आगे बढ़ने का विचार और प्रयास करना चाहिए।

वेद का दिव्य सन्देश है -

उद्यानं ते पुरुष नावयानम्

अर्थात् हे मनुष्य, तुझे उन्नति के उच्च शिखर तक पहुंचना है, उसके लिए नित नए-नए तरीके खोजने हैं, खोजते समय अवरोध आएंगे लेकिन तुझे रुकना मना है समस्याओं को ठोकर मारकर आगे बढ़ जाना ही तेरा लक्ष्य होना चाहिए और यही जीवन का वास्तविक उद्देश्य भी है कि आगे बढ़ो और बढ़ते रहो। यह सत्य है कि इंसान के अंदर आगे बढ़ने की इच्छा बचपन से ही होती है यह आग की चिन्गारी सबके अंदर है, पर किसी के भीतर तो यह प्रज्वलित होती है और किसी की आगे बढ़ने की, ऊंचा उठने की इच्छा रूपी अग्नि के ऊपर राख पड़ी होती है और आपने देखा होगा कि जलती हुई आग से तो शेर भी डर जाता है लेकिन बुझी हुई आग की राख को रौंदकर तो चीटियां भी आगे बढ़ जाती हैं; इसलिए अपनी इच्छाओं आकांक्षाओं को राख मत बनने देना। आगे बढ़ना, ऊंचा उठना मनुष्य का लक्ष्य और उद्देश्य होना चाहिए। अपने लक्ष्य और उद्देश्य को पूरा किए बिना, मंजिल को पाएं बिना, कभी नहीं रुकना चाहिए। बहुत बार ऐसा भी देखने में आता है कि जो बच्चे बार-बार असफल होते हैं तो उनको देखकर लोग ताने देने लगते हैं, उन्हें उल्हाने देते हैं, उनकी निंदा करते हैं लेकिन उसी विपरीत वातावरण को अगर अनुकूल बनाकर, उसी अपमान - असफलता से प्रेरणा लेकर अगर को आगे बढ़ने लगता है तो फिर उसकी उन्नति प्रगति और सफलता को कोई रोक नहीं। सकता बस जरूरत है कि हमें अपने स्वरूप को पहचानना होगा। हम परमपिता परमात्मा के अमृत संतान हैं, हमें उसके द्वारा प्रदान किए हुए वैदिक ज्ञान के द्वारा अपने विचारों को अपनी बुद्धि को प्रखर रखना होगा, सावधान रहना होगा, बार-बार विचार करना होगा कि कहीं हम अपने लक्ष्य और उद्देश्य से भटक ना जाएं। हमारे जीवन का उद्देश्य बड़ा होना चाहिए, हमारी सोच बड़ी होनी चाहिए, हमारे कार्य भी बड़े होने चाहिए, हमें किसी भी हाल में, किसी भी स्थिति में, अपने आपको सीमित नहीं करना चाहिए, क्योंकि वेद का संदेश है - उद्यानम् ते पुरुष नावयानम्। प्रत्येक विद्यार्थी को इस वैदिक सन्देश को अपने सामने लिखकर आगे रखना चाहिए। बार-बार पढ़ना चाहिए, इस पर विचारकरना चाहिए। हमें ऊंचा उठना है, हमें आगे बढ़ना है, यह एक ऐसा मंत्र है जिसका मनन करने से मनुष्य को शक्ति प्राप्त होती है, विचारों में नवीनता आती है, जागृति आती है। इसलिए वेद के आदेशानुसार आगे बढ़े और बढ़ते रहें।

महर्षि दयानंद सरस्वती निर्वाण दिवस मनाया

पूवी दिल्ली वेद प्रचार मंडल द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती निर्वाण दिवस पर पूवी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से 31 अक्टूबर 2021 को महर्षि दयानंद गौसम्वर्धन केन्द्र गौशाला गाजीपुर में 21 कुंडीय यज्ञ एवं प्रेरणा सभा के साथ मनाया गया। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य तथा महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी, गौ सम्वर्धन केंद्र के प्रधान श्री बच्चन सिंह आर्य जी सहित कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित थे। सभी महानुभावों ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर यज्ञ में आहुति देकर विश्व में सुख शांति हो ऐसी प्रार्थना करते हुए महर्षि दयानंद जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई और उनके दिखाए रास्ते पर चलने का संकल्प दोहराया गया। समापन में पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री अशोक गुप्ता जी सभी अधिकारियों का धन्यवाद किया। - *मन्त्री*

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

सह रहे थे, पर यह सद्व्यवहार था, यह सज्जनता थी जो परिचितों व अपरिचितों को भी उनका भगत बना देती थी।

दलित उद्धार और अछूतोद्धार

आज दलित उद्धार और अछूतोद्धार की बात सारे नेता करते हैं। वास्तव में यह उनकी ही परिकल्पना थी। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने लिखा है, "स्वामीजी दलितों के सर्वोत्तम हितकर्त्ता व हितचिन्तक थे।" वह लिखते हैं–'कांग्रेस और गांधी जी ने अस्पृश्यों के लिए क्या किया? स्वामीजी के विषय में वे एक और स्थान पर कहते हैं, 'स्वामी श्रद्धानन्द एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने अस्पृश्यता निवारण व दलितोद्धार के कार्यक्रम में रुचि ली थी।

इसी संबंध में 20 मई 1924 को मद्रास के गोखले हॉल में मर्म स्पर्शी भाषण देते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा था कि– "पुरोहितों आदि के अहंकार के कारण आपके यहां ब्राह्मण व ब्राह्मणेतरों का झगड़ा तो चल ही रहा है, अब उससे भी अधिक बुरा एक झगड़ा आपके सामने खड़ा होने वाला है। यदि आपने अस्पृश्य कहे जानेवाले भाष्यों के उद्धार की ओर विशेष ध्यान न दिया तो मैं आपको सचेत करता हूँ की वह दिन दूर नहीं, जब आपके दलित भाई आप से सब तरह का सम्बन्ध तोड़ देंगे। या तो सब के सब दूसरे सम्प्रदायों में चले जायेंगे अथवा अपनी जाति ही अलग बना लेंगे। इस प्रकार के क्रान्तिकारी विचार रखने वालों को बढ़ावा देने वाले लोगों के मुँह पर करारा तमाचा था।

अब कुछ घटनाएँ स्वामी जी की निर्भीकता से जुड़ी हुई भी देख लेते हैं।

उन दिनों की बात हैं जब 1920 के दशक में हिन्दू मुस्लिम दंगों ने जोर पकड़ लिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक स्थान पर भाषण दे रहे थे। तभी कहीं पर गोली चली। मौके पर उपस्थित सरकारी अधिकारी ने स्वामी जी से पूछा की इसकी जिम्मेवारी किस पर है। स्वामी जी ने निर्भीकता से उत्तर दिया "यदि सरकारी कर्मचारी कुछ गड़बड़ न करें तो मुझ पर हैं अन्यथा वह स्वयं जिम्मेदार हैं।" सरकारी अधिकारी चुपचाप वहां से चला गया।

कपूरथला में 1894 में आर्य समाज की स्थापना हुई थी। 1901 में समाज के प्रधान लाला अमरनाथ सरना जी की माता जी का देहांत हो गया। उन्होंने अपनी माता जी का दाह संस्कार वैदिक रीति से करने की घोषणा कर दी। इस समाचार को सुनते ही नगर में हलचल मच गई। लाला जी के घर पर पुलिस आ गई और कहा की यदि आपने वैदिक रीति से संस्कार किया तो आपको जीवन भर कारागार में रहना पड़ेगा। यह समाचार जालंधर और लुधियाना के समाजों तक फैल गया। महात्मा मुंशीराम जी के अन्य आर्यों के साथ लाला जी के यहाँ पर पहुँच गये। अर्थी उठाई गई और बाज़ार में लाई गई। कोतवाल ने अर्थी को रोक लिया। महात्मा जी ने झट कहा– आपने किस विधान से अर्थी को रोका हैं? क्या आपको यह नहीं मालूम की अर्थी को रोकना मना है? एक कुशल वकील की यह बात सुनकर कोतवाल पीछे तो हट गया किन्तु बाज़ार से लेकर शमशान भूमि तक पुलिस ने घेराबंदी कर दी। दर्शक लोग वहाँ पर सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे एवं रियासत के सब प्रतिष्ठित लोग हाथियों पर चढ़कर इस संस्कार को देखने आये थे। दाह संस्कार विधिपूर्वक सम्पन्न हो गया। संस्कार के पश्चात पौराणिक पंडितों

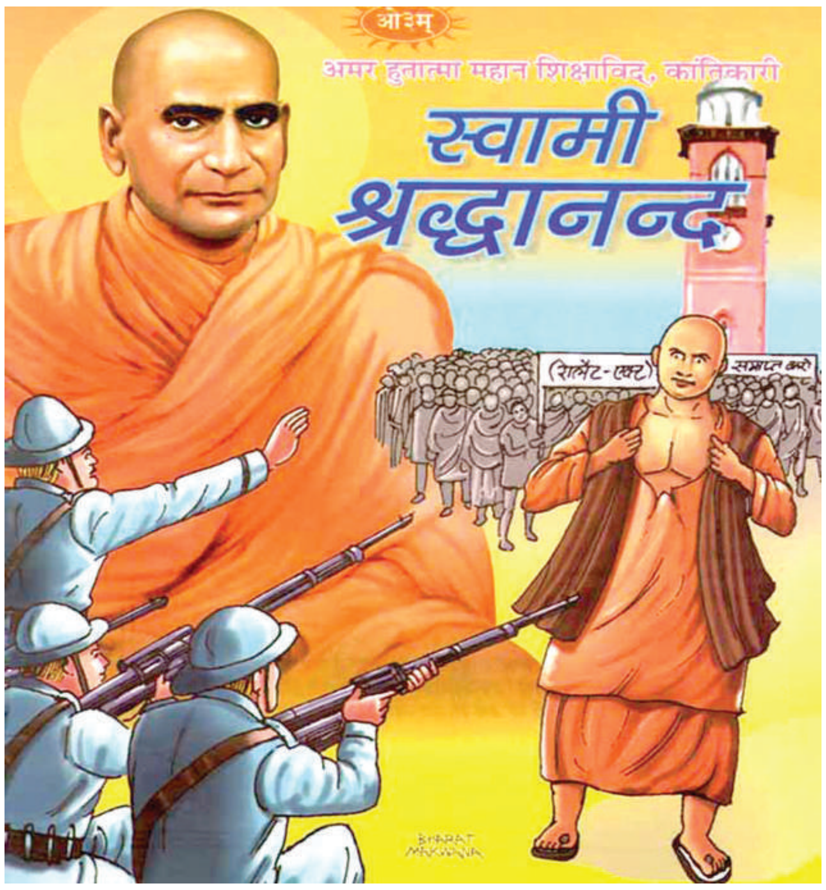

ने आर्यसमाज के सदस्यों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। आर्यों के लिए खाने-पीने का सामान दो माह तक जालंधर से आता रहा था। इस घटना से ऐसे संकट काल में महात्मा मुंशी राम द्वारा किस प्रकार से आर्यों का मनोबल बढ़ाया, इसका तो विवरण मिलता ही हैं अपितु उस काल में आर्यों को किस प्रकार से सामाजिक विरोध का सामना करना पड़ा, उसका विवरण भी मिलता हैं।

कुछ संस्मरण स्वामीजी के गुरुकुल के विद्यार्थियों के साथ व्यवहार के

गुरुकुल में छात्रों की अनुशासनहीनता का दंड देने का महात्मा जी का तरीका अत्यंत निराला था। शारीरिक दंड तो वह किसी को देते ही न थे। छात्रों के साथ निकट सम्बन्ध होने के कारण उन पर पूर्ण विश्वास करते थे। ऐसे अवसरों पर वे उपदेश में छात्रों से स्पष्ट कहते– 'मुझे तुम सब पर पूरा विश्वास है। तुममें से जिससे यह अपराध हुआ हैं, वह मुझसे एकांत में मिल ले अपराध स्वीकार कर ले और उसका प्रायश्चित करे।' इस पद्धति का छात्रों पर अचूक प्रभाव पड़ता था।

वे अपने विद्यार्थियों का कितना ध्यान रखते थे इसका एक उदहारण मुझे याद आता हैं। कक्षा में एक सत्यप्रिय नाम का लड़का था। उसको किसी अपराध पर उन्होंने गुरुकुल से निकाल दिया था। कुछ काल बाद रंगून से उनके किसी व्यापारी मित्र ने उन्हें लिखा कि उसे एक लेखक की आवश्यकता हैं, वे किसी को भेज दें। उन्होंने उसी सत्यप्रिय से कहा कि वह उनका पत्र लेकर रंगून चला जाये। उसकी नियुक्ति वहां 80 या 100 रुपये में कर दी हैं। यह होता है एक अध्यापक का अपने छात्र के प्रति दंड व स्नेह का मिश्रण।

पंडित देवराम जी, जो स्वामी जी के विद्यार्थी थे, लिखते हैं कि एक बार स्वामी श्रद्धानन्द जी के दांत में अत्यंत पीड़ा उठी। पीड़ा से उन्हें तीव्र ज्वर भी हो गया। डॉ. सुखदेव ने उन्हें दवा आदि देकर आराम करने को कहा और उनकी देखरेख के लिए दो-दो घंटे की बारी रात्रि में गुरुकुल में पढ़ने वाले ब्रह्मचारियों की लगा दी।

तीन से पाँच बजे तक मेरी (देवराम) बारी थी। मैं तीन बजे से कुछ पहले महात्मा जी के कक्ष में पहुँच गया। पिछली बारी वाला मुझे आया देख चला गया। मैं चुपचाप कुर्सी पर बैठ गया ताकि महात्मा जी की नींद में कोई बाधा न हो। मैंने विचित्र बात देखी की तीन बजे का घंटा बजते ही महात्मा जी उठ गए। मैंने उनसे पूछा कि दांत के दर्द का क्या हाल रहा। उत्तर में उन्होंने कहा–भाई दर्द तो बहुत था पर मैं चुपचाप पड़ा रहा। नींद भी नहीं आई। मैं देखता था, ब्रह्मचारी आते थे, अपनी नींद पूरी करके चले जाते थे। मुझे तो आदत नहीं अपनी तकलीफ दूसरों को कहूँ और कष्ट दूँ। अच्छा जाओ, अब तो मैं जग गया, तीन बजे तो मैं उठ ही जाया करता हूँ। देवराम जी लिखते हैं इस घटना से मैं बहुत प्रभावित हुआ। मैंने देख लिया कि बड़े आदमी और छोटे आदमी में क्या अंतर होता हैं। बड़े आदमी अपने कष्ट को कुछ नहीं मानते और दूसरों के कष्टों को दूर करने की उनमें फिक्र रहती है। और छोटे आदमी को दूसरे के कष्ट की कोई फिक्र नहीं होती। अपने आराम की ही सदा चिन्ता रहती हैं। (यहां छात्रों को अपनी नींद की चिन्ता थी)।

अध्यापक होते हुए स्वामी जी बहुत बड़े मनोवैज्ञानिक भी थे। उनके बड़े पुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखते हैं कि गुरुकुल में एक रात्रि भोजन के पश्चात् हम दोनों भाइयों (इन्द्र व हरीश जी) ने प्रधान जी (पिता जी) से प्रार्थना की कि हम दोनों अकेले में उनसे कुछ बातें करना चाहते हैं। गुरुकुलीय जीवन में शायद यह पहला अवसर था,जब हमने पिताजी से अलग बात करने का समय माँगा हो, अन्यथा वह दोनों को सदा अन्य ब्रह्मचारियों के समान भाव से ही देखते रहे। हमारी प्रार्थना से पिताजी को आश्चर्य हुआ, तो भी उन्होंने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर ली। और हम दोनों को साथ लेकर उसी समय गुरुकुल वाटिका में चले गये। वहां टहलते-टहलते हमने पिताजी से अपने मन का भाव कहा। भाव यह था की हम दोनों गुरुकुल की शिक्षा से संतुष्ट नही हैं। इस शिक्षा से हम दोनों पंडित नहीं बन सकेंगे। पंडित बनने के लिए काशी में शिक्षा आवश्यक हैं। आप हमें गुरुकुल से उठाकर बनारस भेज दीजिये। हमारे उस प्रस्ताव से पिताजी को जो मानसिक धक्का लगा होगा, उसका अनुमान लगाकर मेरा दिल अब भी काँप उठता हैं। जिस व्यक्ति ने गुरुकुल शिक्षा की स्थापना के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया हो। उसके बेटे ही निष्फलता और निराशा का सन्देश लेकर आयें तो उस व्यक्ति के हृदय पर आघात होना स्वाभाविक ही हैं। पिता जी हमारा प्रस्ताव सुनकर चुप हो गए। बहुत देर तक तीनों मौन मुद्रा में घूमते रहे। यह अनुभव करके कि हमारे शब्दों ने पिताजी को बहुत दुखी किया है, हम दोनों स्तब्ध से हो गये। पिता जी के मन में क्या विचार उठ रहे होंगे इसका अनुमान ही लगाया जा सकता हैं। कुछ देर चुपचाप टहलने के पश्चात् पिता जी ने बड़े शान्त भाव से कहा, 'मैं तुम्हारी बातों का उत्तर कल दूँगा।'

दूसरे रोज हम बड़ी उत्सुकता से उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे। तरह-तरह के विकल्प मन में उठ रहे थे। कभी सोचते की पिताजी बनारस भेज देंगे, न भेजना होता तो उसी दिन इन्कार कर देते। फिर विचार उठता कि भेजना होता तो उसी समय मान भी तो सकते थे, अवश्य इन्कार करेंगे। इसी तरह संकल्प-विकल्प करते साँयकाल का समय आ गया। साँयकाल पढाई से छुट्टी होने पर कमरे से बाहर निकले तो प्रधान जी का चपरासी हाथ में एक कागज लेकर आता हुआ दिखा दिया। उस कागज में निम्न लिखित आशय की आज्ञा लिखी हुई थी, "भोजन से निवृत होकर दो बड़ी श्रेणियों के सब ब्रहमचारी मुख्य अधिष्ठाता जी के निवास स्थान पर एकत्र हों।" हम दोनों भाइयों की दुविधा और भी बढ़ गई। क्या हमारे प्रस्ताव का उत्तर सभी के सामने दिया जायेगा?

भोजन के उपरांत ऊपर की श्रेणियों के सब ब्रह्मचारी प्रधान जी के स्थान पर एकत्र हुए। प्रधान जी ने बड़े प्रसन्न भाव से ब्रह्मचारियों को यह समाचार सुनाया की दोनों बड़ी श्रेणियों को देहरादून यात्रा करवाने का निश्चय किया गया हैं। यह समाचार मात्र हम पिंजरे के पक्षियों को फड़फड़ाने के लिए प्रयाप्त था। हमने अभी हरिद्वार भी अच्छी तरह नहीं देखा था। देहरादून की यात्रा होगी, यह जानकर हम दोनों बहुत ही प्रसन्न हुए।

प्रधान जी ने अत्यंत आकर्षक शब्दों में यात्रा का सारा कार्यक्रम हमारे सामने

– शेष पृष्ठ 7 पर

जरा याद करो बलिदान ...एक शाहदत सी.डी.एस. जनरल बिपिन रावत की स्मृति में श्रद्धांजलि यज्ञ एवं पुष्पांजलि

आर्यसमाज सुदर्शन पार्क एवं आर्य समाज मोती नगर के संयुक्त तत्त्वाधान में पार्किंग स्थल सुदर्शन पार्क चौक पर जरा याद करो बलिदान ... एक शाहदत के अन्तर्गत भारत के प्रथम सी.डी.एस. जनरल बिपिन रावत जी की स्मृति में श्रद्धांजलि यज्ञ एवं पुष्पांजलि कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने अपना उद्बोधन देते हुए उपस्थित जनसाधारण को राष्ट्रभक्ति और देश सेवा करने की प्रेरणा प्रदान की।

आर्य वीर दल के आर्यवीरों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न

दिनांक 21 दिसम्बर, 2021 को आर्यवीर दल दिल्ली की गुरु विरजानंद शाखा पंजाबी बाग पूर्वी के 25 आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया और जीवन में श्रेष्ठ बनने का संकल्प लिया। आर्य वीर दल की सभी शाखाओं में यज्ञोपवीत संस्कार कराने चाहिए। सभी आर्यवीरों के गले में यज्ञोपवित होना प्राथमिकता होनी चाहिए।

आर्यसमाज रोहिणी सै. 3-4-5-6 एवं विजय विहार, दिल्ली में रामचन्द्र चौधरी स्मृति चिकित्सालय का शुभारम्भ

रोहिणी (संवाददाता)। आर्य समाज मन्दिर (पंजी.) सैक्टर 3,4,5,6 एवं विजय विहार, रोहिणी द्वारा मानव कल्याण व समाज हितकारी कार्य सदैव ही किए जाते रहे हैं, इसी संदर्भ में आर्य समाज मन्दिर द्वारा संचालित रोहिणी स्थित सैक्टर 5, फ्लैट न. 2, पॉकेट-सी 9, सोम बाजार रोड, राम चन्द्रचौधरी स्मृति चिकित्सालय में निःशुल्क जांच एवं परामर्श का आरम्भ किया गया है, जिसमें जांच व परामर्श के साथ-साथ दवाईयां भी निःशुल्क दी जाएंगी। चिकित्सालय में प्रत्येक मंगलवार एवं शनिवार को सायं 4 से 6 बजे तक निःशुल्क जांच एवं परामर्श की सुविधा दी जाएगी। कोई भी व्यक्ति चिकित्सालय जाकर निःशुल्क सुविधा का लाभ उठा सकता है।

95वां स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की ओर से आर्य समाज विशाखा एन्कलेव में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का 95वां बलिदान दिवस मनाया। सर्वप्रथम माता सुशीला देवी जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् विशाखा एन्कलेव की प्रधाना श्रीमती चन्दर डुडेजा एवं प्रा आ.म.सभा की प्रधाना रचना आहूजा के द्वारा ध्वजारोहण किया गया। मंच संचालन श्रीमती रचना आहूजा जी ने किया। बहनों

के द्वारा मधुर गीत प्रस्तुत किये गये। मुख्य वक्ता के रूप में सत्यवती कालेज की प्रोफेसर श्रीमती रचना विमल दुबे ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ-साथ अन्य शहीदों को भी स्मरण किया। प्रा. म. स. की पूर्वप्रधाना श्रीमती शशिप्रभा आर्या ने स्वामी जी के विषय में रोचक तथ्य प्रस्तुत किये। प्रा. म. स. की अधिकारी बहनें श्रीमती कृष्णा दुग्गल, प्रेम नरुला, इन्द्रा शर्मा, शकुन्तला, सरला वर्मा, तिमय राखी शर्मा, सुनीता पासी व अन्य बहनें उपस्थित थी। श्रीमती पूनम आर्या द्वारा शांतिपाठ एवं विशाखा एन्कलेव की बहनों की ओर से स्वादिष्ट जलपान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

– श्रीमती रचना आहूजा, प्रधाना

धर्माचार्य पं. सत्यपाल मधुर जी हुए सेवानिवृत : शाल, पीतवस्त्र एवं सम्मान पत्र से किया गया सम्मानित

आर्य समाज पश्चिमी पंजाबी बाग नई दिल्ली-26 के धर्माचार्य पं. सत्यपाल मधुर का दिनांक 19 दिसम्बर 2021 को ठा. विक्रम सिंह जी अध्यक्षता में विदाई समारोह आर्य समाजों के विद्वानों, अधिकारियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। समारोह

से पूर्व आचार्य भद्रकाम वर्णी एवं डा. सूर्यदेव जी ब्रह्मत्व में श्री मधुर जी ने सपरिवार यज्ञ किया। इस अवसर पर श्री नरेश निर्मल के भजन एवं गणेश प्रसाद विद्यालंकार, आचार्य श्यामदेव, मेघश्याम वेदालंकार, पं. अमरदेव शास्त्री एवं वैदिक विद्वान डा. महेश विद्यालंकार द्वारा आर्यसमाज के पुरोहित वर्ग के सम्बन्ध में उद्बोधन हुए। पं. सत्यपाल मधुर जी अपने खट्टे-मीठे अनुभवों को सबके साथ साझा किया। आर्यसमाज पंजाबी बाग के मंत्री श्री अशोक महतानी एवं श्री सत्यानन्द जी आर्य एवं समाज के अधिकारियों तथा आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री सतीश चड्ढा जी के अभिनन्दन पत्र के साथ शाल तथा पुष्पों के साथ किया गया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. कर्णदेव शास्त्री जी ने किया।

आर्यसमाज द्वारा संचालित आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के पांच प्रतिभावान विद्यार्थियों ने उत्तीर्ण की

उ.प्र.लोक सेवा आयोग की प्रारम्भिक परीक्षा : संस्थान का नाम किया रोशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत अगस्त 2018 में आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की स्थापना की गई थी। संस्थान दिनों दिन उन्नति को प्राप्त हो रहा है। गत दिनों संस्थान से कोचिंग प्राप्त पांच प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में सर्वश्री शिवम पाण्डेय (शिवपुरी, म.प्र.), अभिनव मिश्रा (लखनऊ,उ.प्र.), आकाश गौतम (आगरा, उ.प्र.), उत्कर्ष गौतम (गाज़ियाबाद, उ. प्र.) एवं श्री अभिषेक कुमार (औरंगाबाद, बिहार) ने उत्तर प्रदेश संघ लोक सेवा आयोग की प्रारम्भिक परीक्षा उत्तीर्ण करके संस्थान का नाम रोशन किया है।

अभिनव मिश्रा

अभिषेक कुमार

आकाश गौतम

उत्कर्ष गौतम

शिवम पाण्डे

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की प्रारम्भिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले सभी विद्यार्थियों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दयानन्द सेवाश्रम संघ के समस्त अधिकारियों की ओर से शुभकामनाएं।

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

Some Golden Sayings of Swami Dayanand

24. If you do not concede their rights to women, how can you have your own rights?
25. India will progress, but this can be only possible if people give up their selfishness.
26. All men are equal. Since you touch the young ones of cats and dogs without any hesitation, why is it that you regard the touch of a human child as degrading? Just think for yourself what he must think about you at that time. Remember it is the greatest sin to injure anybody's feelings. We should, therefore, do away with this curse of untouchability.
27. If a man seeks your help, give it to him ungrudgingly, even ifhe be your enemy.
28. It is easier to get into bad habits than to give them up.
29. Students should spend their time in studies, in taking exercise, in taking their meals and in sleep. They should have no other occupations than these.
30. Your mother is your greatest well-wisher in this world.
31. Never strike or offend a woman or a child, even though they may be your enemies.
32. He who ill-treats his wife only proves that he was not fit to be married.
33. A man whose character is not above reproach has no right to offer advice to other people.
34. You can never discover the truth if you are a prey to prejudices. If you want to know the truth give up all kinds of prejudice.
35. Never ill-treat women.
36. It is only a fool who is afraid of death.

Maharishi Dayanand Saraswati Say's

India will progress, but this can be only possible if people give up their selfishness. All men are equal. Since you touch the young ones of cats and dogs without any hesitation, why is it that you regard the touch of a human child as degrading? Just think for yourself what he must think about you at that time. Remember it is the greatest sin to injure anybody's feelings. We should, therefore, do away with this curse of untouchability.

37. One should never be ashamed of going to prison or courting death in the cause of truth.
38. Lead a good life and never depend upon others for the satisfaction of your wants.
39. When a person falls on evil days, he cannot distinguish between what is good and what is bad. Whatever he does, he does ill.
40. Be always prompt in doing good. It does not matter if you are slow in the performance of what is bad.
41. There are many men in this world who cannot see their own weak points, but they find out the weak points of others very quickly. Such men are not good.
42. How can it be possible for a man not to suffer for his sins?
43. In silence lies the strength of the fool.
44. He who does not eat when he is hungry and eats when he is not, will fall a prey to many diseases, and will suffer all his life.
45. You along have to suffer for what you do. You cannot do some thing evil while another suffers

for it.

46. He is not a gentleman who always tries to beat his own drum.
47. As you are, so you think others to be.
48. The spirit of jealously is the root ofal! evil.
49. It is a noble thing to lead a misguided man on to the right path.
50. We should try to win over even our enemies with love.
51. Always remember God, for without Him you can never succeed in the world.

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

प्रेरक प्रसंग

लाला जीवनदास जी का हृदय परिवर्तन

आर्यसमाज के इतिहास से सुपरिचित सज्जन लाला जीवनदास जी के नाम नामी से परिचित ही हैं। जब ऋषि ने विषपान से देह त्याग किया तो जो आर्यपुरुष उनकी अन्तिम वेला में उनकी सेवा के लिए अजमेर पहुँचे थे, उनमें लाला जीवनदास जी भी एक थे।

आप पंजाब के प्रमुख ब्राह्मसमाजी थे। ऋषिजी को पंजाब में आमन्त्रित करनेवालों में आप भी एक थे। लाहौर में ऋषि के सत्संग से ऐसे प्रभावित हुए कि आजीवन वैदकि धर्म-प्रचार के लिए यत्नशील रहे। ऋषि के विचारों की आप पर ऐसी छाप लगी कि आपने बिरादरी के विरोध तथा बहिष्कार आदि की किंचत् भी चिन्ता न की। जब लाहौर में ब्राह्म समाजी भी ऋषि की स्पष्टवादिता से अप्रसन्न हो गये तो लाला जीवनदासजी ब्राह्मसमाज से पृथक् होकर आर्यसमाज के स्थापित होने पर इसके सदस्य बने और अधिकारी भी बनाये गये।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जब ऋषि लाहौर में पधारे तो उनके रहने का व्यय ब्राह्मसमाज ने वहन किया था। पता नहीं डॉ. भवानीलालजी भारतीय ने अपने द्वारा लिखित ऋषि जीवन में किस आधार पर यह लिख दिया कि ब्राह्म समाजियों ने ऋषि से यह व्यय माँग लिया।

पंजाब ब्राह्मसमाज के प्रधान लाला काशीरामजी और आर्यसमाज के एक यशस्वी नेता पण्डित विष्णुदत्तजी के लेख इस बात का प्रतिवाद करते हैं।

लाला जीवनदासजी में वेद-प्रचार की ऐसी तड़प थी कि जहाँ कहीं वे किसी को वैदिक मान्तयाओं के विरुद्ध बोलते सुनते तो झट से वार्तालाप, शास्त्रार्थ वा धर्मचर्चा के लिए तैयार हो जाते। पं. विष्णुदत्त के अनुसार वे विपक्षी से वैदिक दृष्टिकोण मनवाकर ही दम लेते थे।

अनेक व्यक्तियों ने उन्हीं के द्वारा सम्पादित और अनुवादित वैदिक सन्ध्या सीखी थी।

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में पण्डित लेखराम इन्हीं के निवास स्थान पर रहते थे और यहीं वीरजी ने वीरगति पाई थी।

राजकीय पद से सेवामुक्त होने पर आप अनारकली बाजार लाहौर में श्री सीतारामजी आर्य लकड़ीवाले की दुकान पर बहुत बैठा करते थे। वहाँ युवक बहुत आते थे। उनसे वार्तालाप करके आप बहुत आनन्दित होते थे। बड़े ओजस्वी ढंग से बोला करते थे। विचित्र बात तो यह है कि वे व्याख्याता नहीं थे। प्रबन्ध-पटु थे तथापि बातचीत से ही अनेक व्यक्तियों को आर्य बना गये। धन्य है ऐसे पुरुषों का हृदय-परिवर्तन।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : **पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

संस्कृत वाक्य प्रबोध

तिर्यग्जन्तु एवं जलजन्तुप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
595. सर्पा: शीघ्रं सर्पन्ति।	सर्प जल्दी सरकते हैं।
596. अयं कृष्ण: फणी महाविषधारी।	यह काला सांप बड़ा विषवाला है।
597. भवता कदाचिदजगरोऽपि दृष्टो न वा?	आपने कभी अजगर भी देखा है या नहीं?
598. पश्याहिनकुलस्य संग्रामो वर्त्तते।	देख, सांप और नेवले का युद्ध हो रहा है।
599. स वृश्चिकेन दष्टो रोदिति।	वह बिच्छू से काटा हुआ रोता है।
600. इयं गोध स्थूलास्ति।	यह गोह (एक छिपकली) मोटी है।
601. मूषका बिले शेरते।	मूसे बिल में सोते हैं।
602. मक्षिकां भक्षयित्वा वमनं प्रजायते।	मक्खी खाकर वमन हो जाता है।
603. अत्र वास: कर्त्तव्यो निर्मक्षिकं वर्त्तते।	यहां वास करना चाहिये, मक्खी एक भी नहीं है।
604. मधुमक्षिकादशनेन शोथ: प्रजायते।	मधुमक्खियों के काटने से सूजन हो जाती है।
605. भ्रमरा गुञ्जन्त: पुष्पेभ्यो गन्धं गृहणन्ति।	भौरे गूंजते हुए, फूलों से सुगन्धि ग्रहण करते हैं।
606. तिमिङ्गला मत्स्या: समुद्रे भवन्ति।	तिमिङ्गल मछलियां समुद्र में होती हैं।
607. रोहूखड्गसिंहतुण्डराजीवलोचनाश्च कुण्डपु करिणीनदीतडागसमुद्रेषु च निवसन्ति।	रोहू, खड्ग, सिंहतुण्ड और राजीवलोचन इन नामों की मछलियां पुखरिया, नदी, तालाब और समुद्र में वास करती हैं।
608. मकर: पशूनपि गृहीत्वा निगलति।	मगर पशुओं को भी पकड़कर निगल जाता है।
609. नक्रा ग्राहा अपि महान्तो भवन्ति।	नाके घरियार भी बड़े-बड़े होते हैं।
610. कूर्मा: स्वांगानि संकोच्य प्रसारयन्ति।	कछुए अपने अंगों को समेटकर फैलाते हैं।
611. वर्षासु मण्डूका: शब्दयन्ति।	वर्षाकाल में मेंढक शब्द करते हैं।
612. जलमनु या अप्सु निमज्य तट आसते।	जल के मनुष्य पानी में डूबकर तीर पर बैठते हैं।

क्रमश: - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 2 का शेष

पंजाब में धार्मिक बेअदबी के.....

वर्ष 2015 में भी इसी प्रकार पंजाब में बरगाड़ी में गुरुग्रंथ साहिब की बेअदबी का मामला सामने आया था और यह मामला बहुत चर्चा में रहा था क्योंकि यहाँ पर गुरुद्वारा साहिब के पास पवित्र स्वरूप बिखरे पड़े थे। इसे लेकर भी बहुत हंगामा हुआ था, और इस घटना की उच्चस्तरीय जांच के लिए तत्कालीन अकाली भाजपा सरकार ने घटना के दो दिन बाद ही एक न्यायिक आयोग का गठन करके मामले की जांच के आदेश दे दिए थे।

इसके बाद याद कीजिये वर्ष 2016 में भी 47 वर्षीय बलविंदर कौर की हत्या दिन दहाड़े कर दी गयी थी। बलविंदर कौर और ग्रंथी सिकंदर सिंह को 19 अक्टूबर 2015 को गुरुग्रंथ साहिब के अपमान के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। बलविंदर कौर की बेटी के अनुसार उन्हें घवाद्दी के सरपंच ने इस मामले में फंसाया था। उनका कहना था कि उनकी माँ तो धर्म बदलकर सिख हुई थीं। तो ऐसे में जिसने सात वर्ष सेवादार का काम किया हो, अपनी सेवा दी हो, तो वह गुरुग्रंथ साहिब का अपमान कैसे कर सकती है?" लेकिन कथित बेअदबी के कीमत बलविंदर कौर को चुकानी पड़ी। ऐसा नहीं है कि अभी ही यह हत्याएं हुई हैं या हो रही हैं। साल 2018 चरणदास नाम के व्यक्ति पर मुक्तसर में तीन साल पहले धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप लगा था और उसे इसी वर्ष जमानत भी मिल गयी थी। पुलिस अधिकारियों के अनुसार अभी उसके धार्मिक समूह या पंथ का पता नहीं चला था कि अचानक अज्ञात लोगों ने मुक्तसर में भुंडर गाँव में गोली मार कर कर दी थी। यानि देखा जाये तो पिछले पांच सात सालों से पंजाब को फिर से सुलगाने का काम किया जा रहा है। जैसे सिख नॉनसिख का कोई कार्ड खेला जा रहा हो? नफरत की रेवड़ियाँ फिर बांटी जा रही हो? पकड़ों मारों ये गया, वो रहा, एक भीड़ मिनटों में खड़ी हो रही है। आखिर इसके पीछे कौन है? ये सब संयोग है या प्रयोग? क्योंकि कपूरथला की घटना यही संदेह खड़ा कर रही है कि पुलिस की उपस्थिति में हत्या क्यों हुई? बेअदबी करने वाला शख्स कौन था? वो अनजान था तो कपूरथला जिले के निजामपुर गांव कैसे पहुंचा? भीड़ में वो लोग कौन थे जो उसकी पहचान सार्वजनिक होने से पहले उसकी हत्या करने पर उतारू थे? आखिर क्यों हत्या के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में ही प्रशासनिक अधिकारी के पास फोन आने शुरू हो गए। बताया जा रहा है करीब 45 मिनट में 8 फोन आए। इसमें 5 फोन आई जी और 3 एसएसपी ने सुने। इसके बाद उसी प्रेस कॉन्फ्रेंस में अफसरों के तेवर ढीले पड़ गए और तुरंत केस दर्ज करने से मुकर गए ये सब कारण है या अकारण इस चर्चा होना जरुरी है कहीं ऐसा तो नहीं समाज को आपस में लड़वाने वाली ताकतें इसका षड्यंत्र कर रही हो और हम सिर्फ इसी महज संयोग समझते रहे। ऐसे षड्यंत्रकारियों का पर्दाफाश करके उन्हें अभी कड़ा दंड देना चाहिए और समाज को ऐसी घटनाओं के कारण आपसी सद्भाव में कोई बाधा नहीं आने देनी चाहिए। क्योंकि हम एक कडुवा इतिहास दोहराना नहीं चाहते। *– सम्पादक*

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान में आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक 30 जनवरी, 2022 प्रातः 9 से 1 बजे

स्थान – दयानन्द मठ, रोहतक (हरियाणा)

आप सभी सपरिवार आमन्त्रित हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

8901387993, 9911197073, 9716503513, 9813235339

निवेदक :– मा. रामपाल (प्रधान) उम्मेद शर्मा (मन्त्री)

शोक समाचार

श्री वेद प्रकाश आर्य जी का निधन

आर्यसमाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के कार्यकारी महामन्त्री एवं वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक के महामन्त्री श्री वेद प्रकाश आर्य जी का रोहतक में दिनांक 22 दिसम्बर, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ प्रातः 11 बजे रोहतक में सम्पन्न हुआ।

श्री प्रवीण भाटिया जी का निधन

दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार दिल्ली के प्रबन्धक श्री प्रवीण भाटिया जी का दिनांक 22 दिसम्बर, 2021 को निधन हो गया। अन्तिम संस्कार वैदिक रीति के साथ गीता कालोनी शमशान घाट पर किया गया। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

पृष्ठ 4 का शेष

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ....

रखा। साँयकाल के समय चलेंगे। रात को मायापुर वाटिका में ठहरेंगे। सुबह स्टेशन पर पहुँचकर तुम लोगों को यह समझाऊंगा की इंजन से रेल कैसे चलती हैं। देहरादून पहुँचकर जंगलात का ऑफिस, ऑब्जर्वेटरी आदि संस्थायें देखने को मिलेगी। फिर सहस्त्र धारा चलेंगे, इत्यादि इतनी नई चीजें इकट्ठी देखने की आशा उत्पन्न करने के अनन्तर प्रधान जी ने हमारे जिम्मे कई काम लगा दिए। तुम लोग यात्रा के नोट लेने के लिए स्वयं जिल्द वाली डायरियां तैयार कर लो। सब मैले कपड़ो को धो डालो। चार दिन के लिए खैर की दातुन इकट्ठी कर लो। इस प्रकार यात्रा और यात्रा की तैयारी का पूरा कार्यक्रम हमारे दिल और दिमाग में भरकर प्रधान जी ने हमें सोने के लिए आश्रम में भेज दिया।

वास्तव में महात्मा जी भांप गए थे कि उनके दोनों बेटे व अन्य ब्रहमचारी शिक्षा के लिये काशी नहीं जाना चाहते अपितु, जंगल में स्थापित गुरुकुल के नित्य प्रति के अकेलेपन से उदास हो रहे थे और बाहर जाने का बहाना ढूंढ रहे थे। उन्होंने उनके मन की बात समझ ली और देहरादून भ्रमण का कार्यक्रम बना दिया।

यह था महात्मा जी का मनोविज्ञान। विद्यार्थी वास्तव में क्या कहना चाहता है और मुख से क्या कह रहा है इस बात को वह भलीभाँति समझ गए थे।

संगठन निर्माणकर्ता श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानंद का सबसे बड़ा गुण था संगठन निर्माणकर्ता और इसके लिए वह कार्यकर्ताओं से आत्मीय संबंध बनाते थे। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को जब भी वे किसी भी प्रकार की विपत्ति में पाते तो झट उनकी सहायता को निकल पड़ते। लाला लाजपत राय के देश निर्वासन के समय आपने उनके समर्थन में लेख लिखकर ब्रिटिश सरकार को खुलेआम चुनौती दी थी जबकि लाला जी आपके प्रमुख आलोचकों में से थे।

आर्यसमाज के अनन्य प्रचारक महाशय चिरंजीलाल जी पंडित लेखराम के समान वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में अपना तन, मन, धन समर्पित करने वाले प्रचारक थे। आप पर एक अभियोग भी चला जिसके कारण आपको 4 मास की सजा हुई और 50 रुपये का दंड मिला। महात्मा मुंशीराम ने झट आपके लिए अपील की और आपको छुड़ा लिया। स्वामीजी समझते थे कि संगठन निर्माणकर्ता वही बन सकता है जो अपने सहयोगियों के दुःख और दर्द में उनका साथ दे।

गुरुकुल में आयुर्वेद विद्यालय खोलने के पीछे स्वामी जी की धारणा

स्वामी जी महाराज ने 1922–23 में बर्मा जाकर, वहाँ से प्रचुर धन प्राप्त कर आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना की थी। किन्तु इसका वास्तविक उद्देश्य उन्होंने छात्रों को अपने बलिदान से दो माह पूर्व ही बताया था। अंतिम बार अक्टूबर 1926 में स्वामी जी गुरुकुल काँगड़ी पधारे थे। अपने 8–10 दिन के निवासकाल के समय स्वामी जी ने इच्छा प्रकट की कि वह आयुर्वेद महाविद्यालय के छात्रों से मिलना चाहते हैं। आयुर्वेद विद्यालय में एक खटुए का वृक्ष था। सब छात्र उस वृक्ष के नीचे एकत्र हो गये। स्वामी जी अपने निवास स्थान से बाहर आये और सबने उनके चरण स्पर्श किये। बैठने पर छात्रों से पढ़ाई लिखाई के बारे में हाल-चाल पूछा और आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना के विषय में अपने उद्गार प्रकट किये। उन्होंने बताया कक किस प्रकार बौद्ध भिक्षु चिकित्सा में पारंगत होकर तिब्बत, बर्मा, श्री लंका, चीन , कम्बोडिया और मंगोलिया आदि देशों में आर्य संस्कृति की वैजन्ती फैलाई थी। गुरुकुल एक सौदेश्य संस्था है। ज्ञान-विज्ञान के प्रसार के साथ ही विश्व में वैदिक संस्कृति का विस्तार हो जिससे विश्व एकनीड़ होकर प्रेम से रह सके। यही आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना का हेतु था। इसी वार्तालाप में स्वामी जी ने सभी छात्रों को साहसी बनने का उपदेश दिया और प्रेरित किया की देश-विदेश में जाकर ज्ञान उपार्जन के लिए कुछ साहसिक कार्य भी करें।

शुद्धि सभा बनाने के पीछे स्वामी जी की धारणा

आगरा व मथुरा के आस पास रहने वाले मलकाने राजपूत जिनके सभी रीति रिवाज व पूजा पद्धतियां आदि हिन्दू व हिन्दुओं के समान थीं, मुसलमान कहलाते थे। वे चाहते थे कि उनको उनके पूर्वजों के हिन्दू धर्म में शामिल कर लिया जाये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना कर लगभग 2 लाख की संख्या में मलकाने राजपूतों को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कराया । उनका यह कार्य इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है।

स्वामी श्रद्धानंद को जीवन में सफलता अपने आचरण और ईश्वर पर दृढ़ विश्वास से मिली

स्वामी श्रद्धानंद ने जो अपने जीवन में सफलता प्राप्त की उसका कारण उनकी विद्या न थी, उनका वकील होना न था और न ही उनकी मीठी वाणी थी, बल्कि विशेष कारण उनका आचारवान होना था। वे जो कुछ कहते थे उस पर आचरण भी करते थे। उनकी आत्मा शुद्ध थी इसलिए उनके कथन का प्रभाव पड़ता था। स्वामी जी अपने कर्तव्य को अनुभव करते हुए ईश्वरीय नियमों और सच्चा का निडरता से प्रचार करते थे। वह अपने असल असूल से कभी नहीं डगमगाए। उनका वैदिक धर्म प्रचार इस कारण से प्रभावित करता था की वे दृढ़ता से अपने जीवन में उसका पालन करते थे। उनका ईश्वर के प्रति विश्वास दृढ़ था। घोर निराशा में भी उन्होंने बलवती आशा का संचार किया था और कितने ही भटकते हुओं को सन्मार्ग पर लगाया था।

तो ये थी स्वामी श्रद्धानंद के जीवन के कुछ प्रेरणादायक संस्मरण। हम भी इनसे कुछ सीख पाएँ तो हमारा यह बलिदान दिवस मनाना सफल हो जाएगा।

– श्रीमती हर्ष नारंग,
दयानन्द विहार, दिल्ली-11002

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 20 दिसम्बर, 2021 से रविवार 26 दिसम्बर, 2021
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 23-24/12/2021 (गुरु-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 दिसम्बर, 2021

।।ओ३म्।।
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में
26वाँ आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन
ऑनलाइन
रविवार, 23 जनवरी 2022
समय : 11 बजे से
ऑनलाइन पंजीकरण : ₹ 500
लिंक : bit.ly/parichay2021
पंजीकरण की अन्तिम तिथि 22 जनवरी 2021, सायं 4 बजे
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
अर्जुन देव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक, 9414187428
आर्य सतीश चड्ढा, राष्ट्रीय सहसंयोजक, 9313013123
सम्पर्क सूत्र 9311413920

प्रतिष्ठा में,

आसाम आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री महेन्द्र सिंह राजपूत जी का सभा कार्यालय में पधारने पर स्वागत एवं सम्मान

आसाम आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री महेन्द्र सिंह राजपूत जी का दिनांक 20 दिसम्बर को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में पधारने पर पीतवस्त्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उनके बड़े भाई श्री एस. एस. राजपूत जी एवं अन्य पारिवारिक जन भी साथ में थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
मानवमात्र की सहायतार्थ
तैयार मोबाइल एप्प
आर्य समाज भजनावली
ईश्वर भक्ति, मातृ पितृ भक्ति, देश भक्ति, ऋषि भक्ति के प्रेरणादायक कर्णप्रिय गीतों एवं भजनों का अद्भुत संगम।
Google Play
Arya Samaj Bhajnawali
गूगल प्ले स्टोर से आज ही डाउनलोड करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की
सच्चाई
यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला?
लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।
आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।
MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह